प्राचीन भारत का इतिहास जानने के क्या साधन है बताओ।

भारत वर्ष के प्राचीन निवासी लेखनकला से भलीभांति परिचित थे अनेक विषयों पर उत्तम कोटि के ग्रंथों की रचना की थी लेकिन प्राचीन भारत में वैज्ञानिक ढंग से क्रमबद्ध इतिहास लिखने की प्रथा नहीं थी क्योंकि ऐतिहासिक ग्रंथों एवं का अभाव था इन सब कारणों से प्राचीन भारत के इतिहास के लेखन में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा इसके बावजूद विद्वानों ने बड़े परिश्रम के साथ इतिहास का लेखन किया जिन साधनों का उपयोग किया वे निम्न है।

(1) अभिलेख → प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी

के लिए अभिलेख सबसे महत्वपूर्ण साधन है जो हजारों की संख्या में उपलब्ध है इन अभिलेखों को चार भागों में में विभक्त किया जाता है।

(1) गुहालेख (2) शिलालेख (3) स्तम्भलेख तथा (4) ताम्रपत्रों के लेख।

ऐसी लेखों में अशोक ने अपने सम्पूर्ण राज्य में शिलाओं तथा स्तम्भों पर लेख लिखवाया था जो राजाज्ञाओं तथा घोषणाओं के रूप में रूप पाये जाते है जो तत्कालिन इतिहास जानने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

सम्राट अशोक के अभिलेखों के अतिरि

Thursday 21

विवरणों से इतिहास की जानकारी मिलती है ~~चीनी~~ यूनान
रोम फारस का नाम आता है इनमें हेरोडोटस का नाम
आता है वह स्वयं भारत नहीं आया था लेकिन उसने
फारस और भारत के सम्बन्ध पर प्रकाश डाला है
सिकन्दर के आक्रमण के बाद यूनानी लेखकों का आना
जाना था भारत से लौटने पर सिकन्दर के अफसरों ने कुछ
यहाँ देखा उसका विवरण किया। इसी आधार पर यूनान
और रोम के विद्वानों ने भारत के सम्बन्ध में लिखना
शुरू किया इनमें ऐरियन का नाम आता है ~~पाश्चात्य~~
पाश्चात्य लेखकों में मेगास्थनीज का नाम सर्वाधिक
महत्वपूर्ण है वह सेल्युकस का राजदूत ~~था~~ था चन्द्रगुप्त
मौर्य के दरबार में आया था उसकी पुस्तक
इंडिका काफी प्रकाश डालती है

Friday 22

चीनी यात्री फाहियान और ह्वेनसांग का स्थान आता
है।

~~अन्य~~ इनके अतिरिक्त कुछ मुसलमान लेखकों के नाम महत्वपूर्ण
है जैसे अलबरूनी, अल बिलादुरी, सुलेमान
अलमसूदी, पश्चात इन मुसलमान लेखकों ने
प्राचीन भारत पर प्रकाश डाला।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो
जाता है प्राचीन भारतीय इतिहास के विविध स्रोत है। साथ ही
भी स्पष्ट हो जाता है कि इस काल के इतिहास लेखन के लिए
साधनों का अभाव नहीं था। इस कठिनाई को दूर करने के लिए
साहस और धैर्य की आवश्यकता है।

19 Tuesday

इसी तरह ब्राह्मण, उपनिषद ग्रंथों के इतिहास लेखन में सहायता मिली इन ग्रंथों में परीक्षित, उनके पुत्र जन्मेजय, उनके उत्तराधिकारी तथा विदेह के राजा जनक की ओर संकेत है। उपनिषद के बाद सूत्र साहित्य प्रारम्भ होता है

अनैतिहासिक ग्रंथों में बौद्ध और जैन साहित्यों का स्थान आता है

महाकाव्यों से भी भारतीय इतिहास के लेखन में सहायता मिली- इस तरह दो महाकाव्य है रामायण और महाभारत

ऐतिहासिक ग्रंथ ——→ इन ऐतिहासिक ग्रंथों में पुराण का

20 Wednesday

नाम आता है इनके अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रंथों से बड़ी सहायता मिली कौटिल्य का अर्थशास्त्र, ~~पंतंजलि~~ पतंजलि का महाभाष्य, बाणभट्ट का हर्षचरित, बिल्हण का विक्रमांकदेवचरित, कल्हण के राजतरंगिणी, सन्ध्याकर का रामचरित, पद्मगुप्त का नवसाहसांकचरित, जयरथ का पृथ्वीराजविजय, चन्द बरदाई का पृथ्वीराजरासो आदि प्रमुख है।

विदेशी विवरण ——→ विदेशी यात्रियों के

प्राचीन स्मारक — प्राचीन भारत के सांस्कृतिक तथा धार्मिक इतिहास के जानकारी के लिए प्राचीन स्मारक का महत्व है प्राचीन स्मारकों के अन्तर्गत, भग्नावशेष, स्तूप, मूर्तियाँ, विहार चित्रकला, मन्दिर, इमारतें, भवन, कलात्मक कार्य भी सभी आते है धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन के अतिरिक्त देश के आर्थिक दशा पर प्रकाश डाला है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से पता चलता है कि आज से 5 हजार वर्ष पूर्व भारत में उच्च कोटि की सभ्यता थी। तक्षशिला की खुदाई से कुषाण काल का इतिहास ज्ञात हुआ। कानपुर के भीतरगाँव तथा झाँसी, देवगढ़ के मन्दिरों, अजन्ता गुफाओं गुफाओं की चित्रकारी नालन्दा की बुद्ध प्रतिमा से ~~पता चलता है कि हिन्दू काल में~~ भारतीय कला

का स्वतन्त्र विकास हुआ

विदेशों में स्थित जावा तथा कम्बोज के स्मारक भी भारत का द्योतक है।

अनैतिहासिक ग्रंथ — मौर्य काल के पूर्व में भारतीय इतिहास के अध्ययन में हमें धार्मिक ग्रंथों बड़ी सहायता मिली इन ग्रंथों में चारों वेदों का प्रमुख स्थान है वेदों से ऐतिहासिक बातों की जानकारी मिलती है जैसे आर्य कैसे भारत के विभिन्न भागों में फैले उस समय भारत की राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक दशा कैसी थी

February 2019

2019 JANUARY

15 Friday

प्राचीन भारत में और भी अभिलेख है उनमे
दक्षिण भारत के अभिलेख आते है ऐसे अभिलेख-
दक्षिणभारत के अभिलेख आते है इनमे एक प्रशस्ति
मुख्यतः प्रशस्तियो के पाये जाते है इनमे एक प्रशस्ति
समुद्रगुप्त के समय में लिखी गई थी जो अभी भी
प्रयाग के दुर्ग में विद्यमान है गुप्तकाल की जानकारी
अभिलेखो से होती है। ग्वालियर में भोज की
प्रशस्ति मे प्रतिहारो के इतिहास पर प्रकाश डाला चालुक्य
राजा पुलकेशिन द्वितीय की भी प्रशस्ति इसी
प्रकार है।

भारतीय इतिहास लेखन में विदेशी अभिलेखो
का भी महत्वपूर्ण स्थान है एशिया माइनर के बोगजकोई
के लेख में वैदिक देवताओं का उल्लेख है

16 Saturday

फारस में कुछ लेख मिले है जिनसे पता चलता
है कि प्राचीन काल में भारत से सम्बन्ध था।

मुद्रा — मुद्राओं से भी हम प्राचीन भारतीय इतिहास
की जानकारी प्राप्त करते है। प्राचीन भारत के राजनीतिक
आर्थिक, धार्मिक तथा कला सम्बन्धी अनेक बातो
का ज्ञान हमें मुद्राओं से प्राप्त होता है
इन मुद्राओं पर अंकित तिथियों से राजवंशो के
काल तथा उनकी वंशावली का पता चलता है गुप्त
सम्राटों की विजयें तथा शक क्षत्रपतो के शासन का
परिचय मुद्राओं से प्राप्त होता है